Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

चारूचन्द्र चन्दोला के काव्य में वर्णित मानवेत्तर चेतन जगत का सौन्दर्य वर्णन

डॉ. सुमिता
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

शोध सार

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार चारूचन्द्र चन्दोला ने अपनी साहित्य यात्रा में अनेक काव्यों का सृजन किया तथा इन सभी काव्यों में पहाड़ के आंचलिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवेश को प्रमुखता से उजागर किया है। चारूचन्द्र जी का बाल्यकाल पर्वतीय परिवेश में व्यतीत होने के कारण उनके मानस व हृदय पर पहाड़ के प्रतिबिंब की झलक स्पष्टतः दृष्टिगत होती है। इस सृष्टि में सर्वत्र सौन्दर्य है, आवश्यकता है तो सौन्दर्य दृष्टि की जो सौन्दर्य को ढूँढ सके, परख सके। इस जगत में ब्रह्मा की सबसे अद्भुत रचना मानव है तथा मानव का सौन्दर्य समस्त जीवों से श्रेष्ठतर है परन्तु मानव से इतर इस जगत में अन्य जीवों का भी अपना एक विशेष महत्त्व है। चारु चन्द्र चन्दोला जी ने अपने काव्य में यथार्थ का आलम्बन लेकर सौन्दर्य-सौष्ठव को प्रस्तुत किया है। कवि ने सौन्दर्य की एक अलग ही परिधि का निर्माण किया है। मानवीय हो या प्रकृति के विविध रुपों का वर्णन, अत्यन्त वास्तविकता तथा रमणीयता से अपनी कविताओं में मौलिकता से चारु जी ने प्रतिपादित किया है। सौन्दर्य के मानवीय व प्राकृतिक अनेक पक्षों का चारु जी ने अत्यन्त सूक्ष्मता से विवेचन किया है। समय व परिस्थितियों के वास्तविक अंकन पर आधारित सौन्दर्य को उन्होंने निरूपित किया है। कवि अपने विचारों को अत्यन्त स्पष्टता, बेबाकी व कटाक्ष के साथ-साथ व्यंग्यात्मक रुप से व्यक्त करते थे। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की भी इस भूमि में अपनी सार्थकता व श्रृंगारिकता है, प्रस्तुत शोध पत्र में चारूचन्द्र चन्दोला के काव्य में वर्णित 'मानवेत्तर चेतन जगत के सौन्दर्य' पर प्रकाश डाला गया है।

बीज-शब्द: मानवेत्तर, चेतन, सौन्दर्य, विवेचन, सांमजस्य, भावाभिव्यक्ति, अंलकारिक, श्रंगारिक, पर्वतीय

मूल आलेख-

सृष्टि के चहूँ ओर सौन्दर्य ही सौन्दर्य विद्यमान है। जो विश्व के समस्त प्राणियों के चक्षुओं व हृदय को प्रसन्नचित्त करता है। मानव से इतर चेतन जगत के अंतर्गत समस्त जीवों पशु-पक्षी, वृक्षादि सौन्दर्य के अन्य उपमानों की व्याख्या की जाती है। यह सत्य है कि मानव सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना है और उसकी प्रत्येक अवस्था व रुपों का भी सौन्दर्य अद्वितीय है परन्तु मानव के अतिरिक्त इस सृष्टि में अत्यन्त अनुपम सौन्दर्य विद्यमान है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। पशु-पक्षी व अन्य चेतन तत्व इस सृष्टि के अत्यन्त महत्त्व पूर्ण कारक हैं। काव्य क्षेत्र में भी पशु-पक्षी सौन्दर्य का प्रयोग अत्यन्त रमणीयता से हुआ है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी पशु-पक्षियों के माध्यम से अनेक नीति निपुण कथाएँ वर्णित हैं। विष्णु शर्मा द्वारा रचित ग्रन्थ पंचतन्त्र संस्कृत साहित्य में नीति कथाओं का अत्यन्त महत्त्व पूर्ण रचना है जिसमें पशु-पक्षियों के माध्यम से समाज के समक्ष नीति व न्याय युक्त कथाओं का वर्णन किया है। इसमें पशु-पक्षियों का अतुलनीय सौन्दर्य-सौष्ठव प्रदर्शित किया गया है। संस्कृत साहित्य के सौन्दर्य के महान कवि कालिदास ने भी अपने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में तो शकुन्तला के कण्वाश्रम में विचरण करने वाले पशु-पक्षियों, मित्रों का अत्यन्त अनुपम सौन्दर्य विवेचन किया है। शकुन्लता का आश्रम में निवास करने वाले पशु-पक्षियों के साथ मधुर व घनिष्ठ सम्बन्ध अत्यन्त मनोरम सौन्दर्य को दर्शाता है- "एषोटजपर्यन्त चारिणी गर्भ मन्थरा मृगवधू यदा नद्य-प्रसवा भवति, तदा मयं कमपि प्रिय निवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ।"[1]

यहाँ एक मृगी का अत्यन्त सौन्दर्यात्मक चित्रण किया है। शकुन्तला अपने पिता को सम्बोधित करते हुए कहती है कि हे तात जब यह मृगी जो गर्भ के कारण सुस्त व थकान युक्त दिख रही है, जब यह सुखपूर्वक प्रसव से निवृत्त हो जायेगी तो किसी प्रिय के द्वारा मुझे भी शुभ सदेश पहुँचा देना। यहाँ शकुन्तला का मृगी के प्रति करुण व प्रेम भाव अत्यन्त मार्मिकता को दर्शाता है तथा मृगी का सौन्दर्य वर्णन महाकवि कालिदास जी ने अत्यन्त सौन्दर्यात्मक रुप से प्रस्तुत किया है। संस्कृत साहित्य के साथ-साथ हमारे हिन्दी साहित्य में भी पशु-पक्षी आदि के सौन्दर्य का अत्यन्त रमणीयता से विवेचन हुआ है। मानव के सहचर के रुप में इन चेतन जीवों का अत्यन्त कुशलता से प्रयोग हुआ है। प्रत्येक युग व काल में मानव से इतर इन प्राणियों का सौन्दर्य प्रतिपादित होता रहा है। कृष्ण भक्त व भक्तिकाल के अष्टछाप के प्रमुख कवि सूरदास जी ने भी कृष्ण के सखा-मित्र मण्डल इन पशु-पक्षियों का अत्यन्त सौन्दर्यात्मक विवेचन किया है। सूरदास के भ्रमरगीत से ली गई यह पंक्तियाँ भी पक्षी सौन्दर्य का अत्यन्त रमणीय वर्णन करती हैं-

"हमारै हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम वचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।"[2]

हारिल पक्षी जिस प्रकार दृढ़ता से लकड़ी को अपने पंजों में फंसाता है उसी प्रकार गोपियों ने भी श्रीकृष्ण को मन, कर्म और वचन से दृढ़ता से जकड़ रखा है। यहाँ हारिल पक्षी के आन्तरिक सौन्दर्य का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी साहित्य में समय-समय पर पशु-पक्षियों के सौन्दर्य में नित-नूतन प्रयोग होते रहते है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द की कहानी 'दो बैलों की कथा' के मुख्य पात्र हीरा और मोती के बाह्य व आन्तरिक सौन्दर्य से तो सभी परिचित ही हैं।

चारु जी ने सौन्दर्य का प्रस्तुतीकरण आलंकारिक के साथ-साथ यथार्थता की कसौटी पर किया है। उनकी दृष्टि में सौन्दर्य चक्षु ग्राह्य के साथ-साथ हृदय से वास्तविकता से ग्रहण करना भी है। चारु जी जिस प्रकार अपने व्यक्तिगत जीवन में सरल भाव हृदय वाले व्यक्तित्व थे, वही प्रभाव उनकी रचना कौशल पर भी दृष्टिगत होता है। सौन्दर्य के विषय में अपने भावों को व्यंग्यात्मक रुप देते हुए कवि व्यक्त करते हैं-"अन्दर से चाहे कितना ही बदसूरत बनता व बनाया जाता रहा हो लेकिन बाहरी दुनिया में खूबसूरती की खिड़कियाँ खोलने और खुलवाने में भारत ने अपने को 'इण्डिया दि ग्रेट' में प्रमोशन पाने योग्य बना ही दिया है।"

चारु जी कुशल पत्रकार होते हुए कवित्व प्रतिभा के धनी थे, अतः उनकी कविताओं में यथार्थता व वर्तमान परिस्थितियों पर भी कटाक्ष का स्वरूप दृष्टिगत होता है। चारु जी के लिए हर वह जीव सौन्दर्य पूर्ण है जो उदार चरित व परोपकार भाव अपने उर में संयोजित करता है। वास्तविक रुप से सुन्दरता उसी में निहित है। सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों का चारु जी ने अत्यन्त सूक्ष्मता, व्यवहारिकता, यथार्थता से वर्णन किया है। मानवीय सौन्दर्य व प्रकृति सौन्दर्य के सभी पक्षों का चारु जी ने भाव-व्यंजना के साथ प्रस्तुतीकरण कर सौन्दर्य का कुशलता पूर्वक वर्णन किया है। मानवीय सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों चाहे पुरुष सौन्दर्य हो या नारी सौन्दर्य या इतर सभी के बाह्य व आन्तरिक पक्षों का अत्यन्त मौलिकता से प्रयोग अपने काव्य में चारु जी ने प्रस्तुत किया है। चारुचन्द्र चन्दोला को मानवेत्तर चेतन जगत से अत्यधिक स्नेह था, अतः उन्होंने अपने काव्य में पशु-पक्षी आदि जीवों का सौन्दर्य अत्यन्त रमणीयता से निरूपित किया है।

चारु जी पर्यावरण प्रिय व्यक्तित्व वाले कवि हैं उनकी रचनाओं में जहाँ मानवीय सौन्दर्य में पुरुष, नारी, बाल इत्यादि का सौन्दर्य वर्णित है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण में स्थित सभी जीवों को भी अत्यन्त सुन्दरता से प्रतिपादन किया है। चारु जी ने चिड़िया की मन:स्थिति का वर्णन कर खग-सौन्दर्य का अत्यन्त भावुकता से वर्णन किया है-

"पेड़ो को छोड़कर

चली आई है एक चिड़िया

मेरे घर में

बनाने के लिए घोंसला

x x x x x x x x

चिड़िया समझती है

बूचड़खाने में रहना उचित नहीं है।"[3]

यहाँ उस पक्षी की भयभीत हृदय स्थिति को प्रकट कर कवि ने नभचर के प्रति उदार भावों को प्रकट किया है। चारु जी ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए पक्षी सौन्दर्य का भी अपनी कविता में भावात्मक विवेचन किया है। पुनः उस खग की असमर्थता को चारु जी अपने काव्य में व्यक्त करते हैं-

"पहाड़ी दीदियों का साथ भी नहीं दे सकती है

क्योंकि-

वह समझती है कि चिपक नहीं सकती है।"[4]

गौरा देवी के नेतृत्व में उत्तराखंड में चलाया गया वृक्षों की रक्षा के लिए 'चिपको आन्दोलन' तत्कालीन 'ज्वलन्त' आन्दोलन था उसी के परिप्रेक्ष्य में चारु जी ने अपने विचारों को खग की भावना के माध्यम से व्यक्त किया है कि वह असहाय पक्षी पहाड़ की उस आन्दोलन की प्रतिभागियों का भी साथ नहीं दे सकती क्योंकि उस को चिपकना नहीं आता है। यहाँ उस पक्षी के माध्यम से कवि ने तत्कालीन भयभीत समाज की वास्तविकता को भी उजागर किया है।

मानवेत्तर चेतन जगत का सौन्दर्य व वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के यथार्थ का सामंजस्य कर चारु जी ने अत्यन्त भावुकता से प्रतिपादन किया है-

"नहा-धोकर पहन लेगा

जब मौसम नए कपड़े

आँगन में आएँगी

भूख से अधमरी चिड़ियाँ।"[5]

यहाँ चारु जी ने सामाजिक व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि जब यह पर्यावरण परिवर्तित हो नव ऋतु में रुप ग्रहण कर लेगा तो भूख से व्यथित चिड़िया हमारे आँगन में आ गिरेगी क्योंकि उसके लिए उसके आधार स्तम्भ कहीं नहीं रहेंगे और उस स्थिति में सभी अपने-अपने पक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करेंगे। इस भाव को कवि ने व्यंग्यात्मक रुप से व्यक्त किया है-

"तुम कहोगे

इन्हें दाना-पानी दे दो

महँगाई का प्रश्न उठाकर

पत्नी कहेगी

इन्हें जाने दो

बच्चे कहेंगे

पकड़ लो।"[6]

यहाँ कवि ने उस पक्षी के प्रति भिन्न-भिन्न विचार प्रकट करके वर्तमान सामाजिक असमानताओं का परिचय दिया है। 'महँगाई' शब्द प्रयोग कर तत्कालीन अर्थव्यवस्था पर भी चारु जी ने कटाक्ष कर बच्चों की मासूमियत को दर्शाकर भावुकता को भी स्थान दिया है। चारु जी की यह प्रमुख विशेषता है कि वह एक ही बात से अनेक विचारों को व्यक्त कर देते थे और यह उनके काव्य को विशिष्ट भी बनाता है। पक्षी का भावात्मक चित्रण कर मानवेत्तर चेतन जगत का सौन्दर्य भी चारु जी ने प्रतिपादित कर दिया है। चारु जी पुनः पक्षियों के लिए चिन्तित भाव उत्पन्न कर उनके विषय में कहते हैं-

"इस बीच

कहाँ रहती हैं/क्या करती हैं

कहाँ चले जाते हैं उनके गीत/

यह पूछने के लिए

चिड़ियों से

तब ही आएँगें

जब पेड़ों पर होने लगेगा

उनका पुनर्वास।"[7]

पतझड़ ऋतु सभी के लिए नीरस व निराशा का स्थान है तथा इस समय सभी पक्षी निराश्रित हो जाते हैं। इसी विषय पर चारु जी ने गम्भीर विचार प्रस्तुत किये हैं कि इस ऋतु काल के मध्य चिड़ियाँ कहाँ चली जाती हैं और क्या करती होंगी और उनके मधुर गीत व कल-कूजन कहाँ लुप्त हो जाते हैं? यहाँ चारु जी ने मानवेत्तर चेतन जगत का अत्यन्त रमणीय सौन्दर्य का भी प्रतिपादन किया है।

चारुचन्द्र चन्दोला के काव्य में प्रकृति के अपार सौन्दर्य, यथार्थ, वास्तविकता, कल्पनाओं का वर्णन अत्यन्त सूक्ष्म रुप से अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकट हुआ है। कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न रुपों का अत्यन्त रमणीयता के साथ प्रतिपादन किया है। प्रकृति नित्य नव रुप धर मानव हृदय को अपने दृश्यों से अहलादित व आकर्षित करती है। प्रकृति के उन संवेगों से प्रेरित हो कवि अपने काव्य में प्रकृति के सौन्दर्य के विविध रुपों को अपनी मौलिक भावाभिव्यक्ति से अंलकारिक व श्रृंगारिक भाषा द्वारा प्रतिपादित करता है। चारु जी ने बसन्त ऋतु और उसमें व्याप्त चेतन जगत का सुन्दर दृश्य उपस्थित किया है-

"तुम्हारे पास बसन्त है और मेरे पास

फूलों का मकरन्द, भौंरों का गुंजन

फूलों की कूक और तितलियों का इंद्रधनुष।"[8]

बसन्त ऋतु में कवि अपने समीप के वातावरण को व्यक्त करते हैं कि इस समय मेरे पास विविध पुष्पों का मकरन्द है, अलि का मधुर गुंजन है तथा कोयल की मीठी तान है व नाना रंगों से पूर्ण तितलियों का इंद्रधनुष है। यही दृश्य प्रकृति के आलम्बन सौन्दर्य के स्वरूप को स्पष्ट वर्णित करता है। प्रकृति के उद्दीपन रुप के सौन्दर्य का भी चारु जी के काव्य में भली-भाँति कुशलता पूर्वक प्रयोग हुआ है। कवि प्रकृति प्रेमी है इसका प्रमाण उनके काव्य में स्पस्ट दिखाई देता है। पर्वतराज हिमालय के सौन्दर्य को देखकर तथा पर्वतीय अभावों का भी मनन कर चारु जी अपने भाव व्यक्त करते हैं-

"पर्वतराज!

-क्या तुम अपने आँचल में बसे अभावग्रस्त

पर्वतवासियों के लिए

बहा सकते हो रोटी-कपड़ा-दूध और घी की अलकनन्दाएँ?"[9]

हिमालय की शोभा कवि के भावों को और अधिक प्रदीप्त करने का कार्य कर रही है जो कि प्रकृति के उद्दीपन सौन्दर्य का प्रतिपादन कर रहा है। कवि ने जग को प्रकृति के माध्यम से उपदेशात्मक शिक्षा प्रदान करते हुए व्यक्त किया है-

"लौटते हुए

को ही नहीं/

आते हुए

सूर्य को भी देखो।"[10]

चारु जी ने जग को प्रकृति के माध्यम से उपदेश दिया है कि मानव को अपने दु:ख के प्रति शोक को प्रकट नहीं करना चाहिए तथा अपने हृदय में आशा व नव उमंग का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। यहाँ प्रकृति जग को उपदेश देने का श्रेष्ठ कार्य कर रही है। चारु जी ने वर्तमान परिस्थितियों पर भी कटाक्ष करते हुए जग को वास्तविकता का दर्पण दिखाया है। वह सदैव एक पंक्ति से दो भावों को कहने के पक्षधर थे, जिससे जग को नैतिकता का संदेश प्राप्त हो और काव्य के सौन्दर्य की भी पूर्ण स्थिति बनी रहे। यहाँ कोयल का तो आन्तरिक सौन्दर्य प्रस्तुत हुआ ही है साथ ही जग में नयी उमंग का संचार भी कवि ने कर दिया है जो कवि की विशिष्ट कवित्व प्रतिभा तथा काव्य की नवीनता व मौलिकता के दर्शन कराती है।

निष्कर्ष –

चारु जी के मानवेत्तर चेतन जगत के उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उन्होंने प्रकृति में विद्यमान समस्त पशु-पक्षी के प्रति अत्यन्त दया व आत्मीय भाव से उनसे स्नेह किया तथा उनके गुण-दोषों का सौन्दर्य वर्णन अत्यन्त सूक्ष्मता से व्यक्त किया है। वैसे चारु जी ने पशु-पक्षी का उत्कृष्ट सौन्दर्य विवेचन किया परन्तु पक्षी समूह व पक्षियों में चिड़िया के प्रति उनका अनन्य स्नेह प्रकट हुआ है। मानव से इतर जगत के चेतन जीवों को भी कवि ने अपने

काव्य में अत्यन्त प्रमुखता से स्थान दिया है। इन प्राणियों का जितना सूक्ष्म सौन्दर्य वर्णन का यथार्थ स्वरूप चारु जी के काव्य में प्राप्त होता है वैसा अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता है। चारु जी ने अपने प्रकृति सौन्दर्य विवेचन में यथार्थता, तत्कालीन परिस्थितियाँ, भावाभिव्यक्ति, सूक्ष्म विश्लेषण, अंलकारिकता, श्रृंगारिकता, विविधता, नवीनता आदि का प्रयोग कर अपने काव्य में प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य को उपस्थित किया है। अन्य कवियों के काव्य में भी मानव से इतर चेतन जगत का सौन्दर्य प्रकट हुआ है परन्तु चारु जी ने अपने काव्य में इस चेतन जगत के सौन्दर्य के साथ-साथ समाज की यथार्थता व वास्तविकता का जो दर्पण दिखाया है वह अत्यन्त उत्कृष्ट है। कोई भी कवि अपने काव्य को उत्कृष्टता की स्थिति में लाने के लिए उसे अपनी रचना कौशल, भावाभिव्यक्ति, सूक्ष्म अन्वेषण, विश्लेषण, नवीनता आदि से परिपूर्ण कर जग के समक्ष प्रस्तुत करता है। अतः यह कहना कि चारु जी का मानवेत्तर चेतन जगत का सौन्दर्य विवेचन अत्यन्त नूतनता, सामाजिकता, वास्तविकता, यथार्थता, श्रृंगारिकता से परिपूर्ण है तो इस तथ्य में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ सूची

1. जायसी, मलिक मुहम्मद, पद्मावत, साहित्य-सदन, चिरगाँव झाँसी, 2018, पृ0सं0 417
2. सूरदास, सूरसागर, पद-4686
3. चन्दोला, चारुचन्द्र, कुछ नहीं होगा, रत्लाम्बर प्रकाशन, सेवा सदन, देहरादून, 1981, पृ0सं0 90
4. वही, पृ0सं0 91
5. चन्दोला, चारुचन्द्र, अच्छी साँस, गढ़वालायन, देहरादून, 1992, पृ0सं0 9
6. वही, पृ0सं0 9
7. वही, पृ0सं0 58
8. चन्दोला, चारुचन्द्र, कुछ नहीं होगा, रत्लाम्बर प्रकाशन, सेवा सदन, देहरादून, 1981, पृ0सं0 59
9. वही, पृ0सं0 41
10. चन्दोला, चारुचन्द्र, अच्छी साँस, गढ़वालायन, देहरादून, 1992, पृ0सं0 10